**परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय**

**कक्षा-6**

**हिन्दी- वसंत भाग- 1**

**पाठ्य सामग्री- 1.1**

**पाठ-6 पार नज़र के**

**कहानी तथा लेखक परिचय-** ‘पार नज़र के’ कहानी विज्ञान कल्पना पर आधारित एक बाल कहानी है। इस कहानी के लेखक ‘जयंत विष्णु नार्लीकर’ एक प्रसिद्ध भारतीय भौतिकीय वैज्ञानिक हैं। श्री नार्लीकर ने विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए हिन्दी, मराठी और अंग्रेज़ी में विज्ञान पर आधारित अनेक पुस्तकें लिखी हैं। यह कहानी भी बच्चों में विज्ञान के प्रति रुचि उत्पन्न करने एवं जिज्ञासा बढ़ाने के उद्देश्य से लिखी गयी है। यह कहानी आज से कई वर्ष आगे की कल्पना पर आधारित है, जब मंगल ग्रह पर जीवन हो सकता है। इस कहानी में मंगल ग्रह की ज़मीन के नीचे रहने वाले प्राणियों को माध्यम बनाकर ऐसी कल्पना की गयी है। यह कहानी हमें यह सोचने पर विवश करती है कि हमारा भविष्य कैसा होगा?

**कहानी का सारांश (भाग-1)**

‘पार नज़र के’ कहानी में एक छोटा बच्चा है, जिसका नाम छोटू है। छोटू का परिवार मंगल ग्रह की ज़मीन के अंदर रहता है। छोटू के पापा ज़मीन के ऊपर जाकर काम करते हैं। उनके ऊपर जाने के लिए एक सुरंगनुमा रास्ता बना हुआ है।

**छोटू का सुरंग में प्रवेश-**  एक दिन छोटू के पापा की छुट्टी थी, इसलिए वे घर पर थे। छोटू ने चोरी- छिपे अपने पापा का सिक्योरिटी पास ले लिया और सुरंग की तरफ चल दिया। सुरंगनुमा रास्ते में दिये जल रहे थे और उसके अंदर जाने से पहले एक बंद दरवाजे का सामना करना पड़ता था। दरवाज़े में एक खाँचा बना हुआ था, जिसमें कार्ड डालकर छोटू ने सुरंग में प्रवेश किया। लेकिन छोटू को पता नहीं था कि उस सुरंग में जगह-जगह निरीक्षक यंत्र लगे थे, जो किसी भी संदेहास्पद स्थिति की सूचना नियंत्रण केंद्र को दे देते थे। जैसे ही छोटू की तस्वीर नियंत्रण केंद्र तक पहुंची, वैसे ही सिपाहियों ने आकर छोटू को पकड़ लिया और उसके घर छोड़ आए।

**छोटू की माँ का क्रोध और पिता का समझाना-** घर पर माँ छोटू का इंतज़ार कर रही थी और उसकी खबर लेने वाली थी लेकिन छोटू के पापा ने उसे यह कहकर बचा लिया कि वे उसे समझा देंगे और वह दुबारा ऐसा नहीं करेगा।

फिर उन्होने छोटू को समझाया कि वे जहाँ काम करते हैं, वह जगह ज़मीन के ऊपर है और आम आदमी वहाँ के माहौल में जी नहीं सकता। वे वहाँ एक विशेष प्रकार का स्पेस-सूट पहन कर जाते हैं, जिससे साँस ले पाते हैं और ठंड से बच पाते हैं। ख़ास किस्म के जूतों की वजह से वे वहाँ पर चल पाते हैं और इसके लिए उन्हे विशेष प्रकार का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

छोटू के पापा ने उसे बताया कि बहुत समय पहले मंगल ग्रह पर भी सभी लोग ज़मीन के ऊपर रहते थे लेकिन धीरे-धीरे सूरज में परिवर्तन होने लगा और इसके कारण वातावरण में भी परिवर्तन होने लगा। धीरे-धीरे धरती के सारे जीव-जन्तु मरने लगे। सिर्फ़ हमारे पूर्वजों ने अपने तकनीकी ज्ञान के आधार पर ज़मीन के नीचे घर बना लिया और विभिन्न प्रकार के यंत्रों के सहारे सूरज की रोशनी और गर्मी का इस्तेमाल करने लगे। उन्होने यह भी बताया कि उनके जैसे कुछ लोग इन्हीं यंत्रों का ध्यान रखते हैं।

**कहानी के इस भाग में आए कठिन शब्द तथा उनके अर्थ**

**शब्द - अर्थ**

सुरंगनुमा सुरंग की तरह

वार्तालाप बातचीत

चंद थोड़े/ थोड़ा/ कुछ

चुनिंदा चुने हुए

प्रवेश करना अंदर जाना

निरीक्षक निरीक्षण करने वाला/ देखने वाला

यंत्र मशीन

गतिविधियाँ व्यवहार/ क्रिया-कलाप

लाज़िमी जो होना निश्चित हो

किस्म प्रकार

मुमकिन संभव

प्रशिक्षण कार्य विशेष की शिक्षा

बगैर बिना

पुरखे पूर्वज

ऊष्णता गर्मी

इस्तेमाल प्रयोग

सतर्कता सावधानी

**कहानी के इस भाग में आए मुहावरे और उनके अर्थ**

नज़र दौड़ाना – चारों तरफ़ देखना

मौका हाथ लगना- अवसर मिलना / मौका मिलना